डॉ० अनुजा कुमारी
History (Hons) SNSRKS
BA - I

⑥ प्रश्न :- Discuss the Origin and Growth of man?

मानव के उद्भव और विकास के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- मानव सभ्यता की उत्पत्ति एवं विकास की कहानी अत्यंत ही रोचक है। मानव को आदिम युग से लेकर आधुनिक युग तक पहुँचाने में सफलता पाने करोड़ों वर्ष लग गये। इस क्रम में उन्हें अनेक विषम परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ा। लेकिन मनुष्य उससे कहीं आगे बढ़ गया। वह परिस्थितियों से हार नहीं माना अपनी बुद्धि और शक्ति के बल पर वह हमेशा विजय रहा। अपने हाथों एवं मस्तिष्क का समुचित उपयोग कर वह आदि मानव से सफल मानव बना। इतिहास में हम सभी मानव के विकास, उसके संघर्ष, उत्थान एवं पतन तथा उसकी सांस्कृतिक उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त करते हैं, लेकिन इसके लिए हमें साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों सामग्री का साहारा लेना पड़ता है। मानव के जिस क्रिया-कलाप का लिखित विवरण हमें प्राप्त होता है उसे हम इतिहास कहते हैं और जिसकी जानकारी हमें लिखित रूप से प्राप्त नहीं होता उसे हम प्रागैतिहास कहते हैं। प्रागैतिहास की जानकारी हमें अनुमानों के आधार पर मिलती है।

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

प्रारंभिक समय में मनुष्य का प्रकृति के साथ संघर्ष एवं विषम परिस्थितयों पर विजय प्राप्त करने का संघर्ष ज्ञान हमें सिर्फ प्रागैतिहास से ही मिलता है। क्योंकि इस समय में मनुष्य लिखने की कला से बिल्कुल ही परिचित नहीं था। इसीलिए प्रागैतिहास काल का मानव सभ्यता की उत्पत्ति एवं विकास को महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इन्हीं युगों में पृथ्वी पर पहला मानव कब, कैसे और कहाँ पैदा हुआ। यह कहना तो थोड़ा कठिन है। लेकिन विभिन्न देशों एवं धर्म ग्रंथों के आधार पर मनुष्यों के उत्पत्तियों के संबंध में हमें अनेक जानकारी मिलती है कि ब्रह्मा जी ने संसार की सृष्टि की और आधुनिक काल में हमें यह जानकारी मिलती है कि जीवों के क्रमिक विकास की प्रक्रिया के द्वारा ही मानव का जन्म हुआ। लगभग 300 करोड़ वर्ष से 700 करोड़ वर्ष कि अवधि के दौरान पृथ्वी पर महान जलवायु परिवर्तन हुआ, जिन्होंने जीवों के विकास को प्रभावित किया। सबसे पहले झिल्ली आदि और पौधे उत्पन्न हुए। उसके बाद मछलियाँ आई, उसके बाद स्तन पायी प्राणी और पक्षी का आविर्भाव हुआ इस प्राणियों में सबसे प्रमुख नरबानर थे और इन्हीं से आगे चलकर मनुष्य का विकास हुआ। वर्तमान मानव उसी ज्ञानी जाति का है और भारत में इसकी शाखा

डॉ० अनुपमा कुमारी
SNSRKS

का काल भी कहा जाता है। वैसे तो बहुत दिनों तक विद्वानों मध्यपाषाणयुग के अस्तित्व से इंकार करते थे। लेकिन इनों शाकम्बरी की खुदाई में प्रयोग में कुछ ऐसे उपकरण प्रकाश में आए जिन्होंने उस धारणा को खंडित कर दिया पुरापाषाणयुग और मध्यपाषाणयुग के बीच अंतर नहीं था। वस्तुतः यह काल नवपाषाणयुग का अग्रगामी था। इस युग में ऐसे तत्वों का विकास हुआ, जिन्होंने नव-पाषाणयुग में मानव के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन ला दिया। वैसे भी मध्यपाषाणयुग कालीन संस्कृति में हमें अनेक तत्व देखने को मिलते हैं। जनसंख्या में वृद्धि और आखेट की सुगमता से मनुष्य छोटे-छोटे टोलियों में रहने लगा। लेकिन धीरे-धीरे स्थायी निवास की परम्परा चली और पशुपालन तथा कृषि की शुरुआत हुई।

प्रागैतिहासिक काल में मानव विकास की सबसे प्रमुख सीढ़ी नवपाषाणकालीन संस्कृति है। वैसे तो यह युग काफी छोटा था। लेकिन सारे के सारे परिवर्तन अथवा परिवर्तन इसी युग में हुए थे। क्योंकि इस युग में हमें अनेक नवपाषाण अवशेषों के प्रमाण मिलते हैं उसके साथ ही साथ इस युग में अनेक आर्थिक परिवर्तन भी हुए जिन्होंने बाद में चलकर सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया। इस युग की सबसे महत्व घटना थी। मनुष्य का भोजन उत्पादक के रूप में परिवर्तन आई। इस समय स्थायी

* शेष अगले अंक में...

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

1 करीब 20 लाख वर्ष से 10 लाख वर्ष तक पुरानी है। मनुष्य और उसके पूर्वज पूर्णतः प्रकृति पर आधारित थे। लेकिन इस समय उनमें और पशुओं में बहुत कम अंतर था। लेकिन धीरे-धीरे मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर अपने आप को स्वावलम्बी बनाना प्रारम्भ किया। इसके लिए उसे अपनी सुरक्षा और भोजन जुटाने के लिए हथियारों और विभिन्न उपकरणों का निर्माण करना पड़ा। मानव विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ उसके उपकरण भी बदलते चले गये। किसी युग विशेष में एक ही प्रकार के उपकरण का बाहुल्य था। इसी को आधार मानकर विद्वानों ने मानव सभ्यता के इतिहास को क्रमशः पाषाणयुग, कांस्ययुग और लौहयुग के रूप में विभक्त किया लेकिन यह विभाजन सही नहीं था। इसीलिए तो कालांतर में मनुष्य के क्रमिक विकास के आधार पर मानव सभ्यता को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया गया। पाषाण युग एवं धातु युग। मनुष्य ने अपने जीवन का सबसे लम्बा समय इसी युग के अंतर्गत व्यतीत किया और उस क्रम में उन्होंने प्रकृति से संघर्ष कर जीने ~~क्रम में उन्होंने प्रकृति~~ की कला सीखी। इन विभिन्न चरणों में मानव विकास की प्रक्रिया प्रांरभ हुई, जिसका प्रभाव बाद की प्रगति पर पड़ा। उसके बाद मध्य पाषाण युग का काल था, जिसे संक्रांति